

# वेद – Vedas

 samanyagyan.com/hindi/gk-vedas

इतिहास विषय के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए, IAS परीक्षा के लिए 'वेद' विषय महत्वपूर्ण है। प्रीलिम्स या मेन्स स्टेज में किसी भी प्रकार के वेदों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं। इसलिए, यह लेख सिविल सेवा परीक्षा के लिए चार वेदों के बारे में प्रासंगिक तथ्यों का उल्लेख करेगा।

## वेद क्या है? -What is Vedas?

वेद प्राचीन भारत में उत्पन्न धार्मिक ग्रंथों का एक बड़ा जोड़ है। वैदिक संस्कृत में रचित, ग्रंथ संस्कृत साहित्य की सबसे पुरानी परत और हिंदू धर्म के सबसे पुराने ग्रंथ हैं। हिंदू वेदों को अपौरुषेय मानते हैं, जिसका अर्थ है "मनुष्य का नहीं, अतिमानवीय" और "अवैयक्तिक, अधिकारहीन," गहन साधना के बाद प्राचीन ऋषियों द्वारा सुनी गई पवित्र ध्वनियों और ग्रंथों के खुलासे।

उन्हें दुनिया के सबसे पुराने, धार्मिक कार्यों में नहीं, सबसे पुराना माना जाता है। उन्हें आमतौर पर "शास्त्र" के रूप में संदर्भित किया जाता है, जो सटीक है कि उन्हें दिव्य प्रकृति के विषय में पवित्र रिट के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। अन्य धर्मों के धर्मग्रंथों के विपरीत, हालांकि, वेदों के बारे में यह नहीं सोचा जाता है कि वे किसी विशिष्ट व्यक्ति या व्यक्ति के लिए एक विशिष्ट ऐतिहासिक क्षण में प्रकट हुए हैं; माना जाता है कि वे हमेशा अस्तित्व में थे।

## वेद का अर्थ – Meaning of vedas

वेद धार्मिक ग्रंथ हैं जो हिंदू धर्म के धर्म (जिसे सनातन धर्म के रूप में भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है "अनन्त आदेश" या "अनन्त मार्ग")। वेद शब्द का अर्थ "ज्ञान" है, जिसमें उन्हें अस्तित्व के अंतर्निहित कारण, कार्य और व्यक्तिगत प्रतिक्रिया से संबंधित मौलिक ज्ञान शामिल माना जाता है।

## वेद की उत्पत्ति – Origin of vedas

हिंदू धर्म में वेदों की उत्पत्ति ब्रह्मा जी के द्वारा हुई क्योंकि वेदों का ज्ञान देवों के देव महादेव अर्थात् शिव जी ने ब्रह्माजी को दिया था और ब्रह्माजी ने यह ज्ञान चार ऋषियों को दिया था जिनके द्वारा वेदों की रचना की गई थी। ये चार ऋषि ब्रह्माजी का ही अंश उनके पुत्र थे इनका नाम **अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा** था। इन चार ऋषियों ने तपस्या कर ब्रह्मा जी को प्रभिवित किया जिसके बाद ब्रह्मा जी ने उन्होंने वेदों का ज्ञान प्राप्त किया था और इन चार ऋषियों का जिक्र शतपथ ब्राह्मण और मनुस्मृति में भी मिलता है। शतपथ ब्राह्मण और मनुस्मृति में बताया गया है कि अग्नि, वायु और आदित्य ने क्रमशः **यजुर्वेद, सामवेद और ऋग्वेद** ने किया जबकि **अथर्ववेद** का सम्बन्ध अंगिरा से है अथर्ववेद की रचना अंगिरा ने की।

कहा जाता है कि मनुशोक धरती पर आने से पहले इन वेदों की रचना हो चुकी थी लेकिन कुछ मतों का मानना है कि ये चारो वेद एक ही थे लेकिन वेदव्यास ने इसी एक वेद से चारो वेदों की रचना की लेकिन ये बात सत्य नहीं है क्योंकि मस्तस्य पुराण में बताया गया है कि ये चार वेद शुरुवात से ही अलग थे इन वेदों के साथ चारो ऋषियों का नाम भी जुड़ा हुआ है।

## वैदिक काल – Vedic Period

वैदिक काल (सी. 1500 – सी. 500 बी.सी.ई.) वह युग है जिसमें वेद लेखन के लिए प्रतिबद्ध थे, लेकिन इसका अवधारणाओं या मौखिक परंपराओं की उम्र से कोई लेना-देना नहीं है। पदनाम “वैदिक काल” एक आधुनिक निर्माण है, जो एक इंडो-आर्यन प्रवासन के साक्ष्य पर निर्भर करता है, जिसे, जैसा कि उल्लेख किया गया है, सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया गया है। फिर भी, यह सिद्धांत उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर ऐतिहासिक रूप से सबसे सटीक रूप से स्वीकृत सिद्धांत है।

## उपवेद

हिन्दू धर्म के चार मुख्य माने गए वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद) से निकली हुयी शाखाओं रूपी वेद ज्ञान को उपवेद कहते हैं। उपवेदों के वर्गीकरण के बारे में विभिन्न इतिहासकारों तथा विद्वानों के विभिन्न मत हैं, किन्तु सर्वोपयुक्त निम्नवत है-

### उपवेद भी चार हैं-

आयुर्वेद- ऋग्वेद से (परन्तु सुश्रुत इसे अथर्ववेद से व्युत्पन्न मानते हैं);  
धनुर्वेद – यजुर्वेद से ;  
गन्धर्ववेद – सामवेद से, तथा  
शिल्पवेद – अथर्ववेद से ।

## वेद के प्रकार- Types of Vedas

वेद चार प्रकार के हैं – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। प्राचीन भारतीय इतिहास के सर्वश्रेष्ठ स्रोतों में से एक वैदिक साहित्य है। वेदों ने भारतीय शास्त्र का निर्माण किया है। वैदिक धर्म के विचारों और प्रथाओं को वेदों द्वारा संहिताबद्ध किया जाता है और वे शास्त्रीय हिंदू धर्म का आधार भी बनते हैं।

### वेद का नाम वेद की प्रमुख विशेषताएं

ऋग्वेद	यह वेद का प्राचीनतम रूप है
सामवेद	गायन का सबसे पहला संदर्भ
यजुर्वेद	इसे प्रार्थनाओं की पुस्तक भी कहा जाता है
अथर्ववेद	जादू और आकर्षण की पुस्तक

### वेद विस्तार से –

वह सबसे पुराना वेद ऋग्वेद है। इसमें 1028 भजन हैं, जिन्हें ‘सूक्त’ कहा जाता है और 10 पुस्तकों का संग्रह है, जिन्हें ‘मंडल’ कहा जाता है। ऋग्वेद की विशेषताएं नीचे दी गई तालिका में दी गई हैं:

### ऋग्वेद:

सबसे पुराना वेद ऋग्वेद है। इसमें 1028 भजन हैं, जिन्हें 'सूक्त' कहा जाता है और 10 पुस्तकों का संग्रह है, जिन्हें 'मंडल' कहा जाता है। ऋग्वेद की विशेषताएं नीचे दी गई तालिका में दी गई हैं:

### ऋग्वेद की विशेषताएँ –

- यह वेद का सबसे पुराना रूप और सबसे पुराना ज्ञात वैदिक संस्कृत पाठ (1800 – 1100 ईसा पूर्व) है।
- 'ऋग्वेद' शब्द का अर्थ स्तुति ज्ञान है
- इसमें 10600 छंद हैं।
- 10 किताबों या मंडलों में से, किताब नंबर 1 और 10 सबसे कम उम्र की हैं, क्योंकि उन्हें बाद में किताबों की तुलना में 2 से 9 लिखा गया था।
- ऋग्वैदिक पुस्तकें 2-9 ब्रह्मांड विज्ञान और देवताओं से संबंधित हैं।
- ऋग्वैदिक पुस्तकें 1 और 10 दार्शनिक सवालों से निपटती हैं और समाज में एक दान सहित विभिन्न गुणों के बारे में बात करती हैं।
- ऋग्वैदिक पुस्तकें 2-7 सबसे पुरानी और सबसे छोटी हैं जिन्हें पारिवारिक पुस्तकें भी कहा जाता है।
- ऋग्वैदिक पुस्तकें 1 और 10 सबसे छोटी और सबसे लंबी हैं।
- 1028 भजन अग्नि, इंद्र सहित देवताओं से संबंधित हैं और एक ऋषि ऋषि को समर्पित और समर्पित हैं।
- नौवीं ऋग्वैदिक पुस्तक / मंडला पूरी तरह से सोमा को समर्पित है।
- भजनों को बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले मीटर गायत्री, अनुशुभ्रुत, त्रिशबत और जगती (त्रिशबत और गायत्री सबसे महत्वपूर्ण हैं)

### सामवेद:

धुनों और मंत्रों के वेद के रूप में जाना जाता है, सामवेद 1200-800 ईसा पूर्व के लिए वापस आता है। यह वेद लोक पूजा से संबंधित है। सामवेद की प्रमुख विशेषताएं नीचे दी गई तालिका में दी गई हैं:

### सामवेद की विशेषताएँ-

- 1549 छंद हैं (75 छंदों को छोड़कर, सभी ऋग्वेद से लिए गए हैं)
- सामवेद में दो उपनिषद सन्निहित हैं- चंडोग्य उपनिषद और केना (Kena) उपनिषद
- सामवेद को भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य का मूल माना जाता है।
- इसे मधुर मंत्रों का भंडार माना जाता है।
- यद्यपि इसमें ऋग्वेद की तुलना में कम छंद हैं, हालांकि, इसके ग्रंथ बड़े हैं।
- सामवेद के पाठ के तीन पाठ हैं – कौथुमा, रौयण्य और जमानिया।
- सामवेद को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है – भाग- I में गण नामक धुनों शामिल हैं और भाग- II में आर्चिका नामक तीन छंदों वाली पुस्तक शामिल है।
- सामवेद संहिता का अर्थ पाठ के रूप में पढ़ा जाना नहीं है, यह एक संगीत स्कोर शीट की तरह है जिसे अवश्य सुना जाना चाहिए।

### यजुर्वेद:

यह अनुष्ठान-भेंट मंत्र / मंत्रों का संकलन करता है। ये मंत्र पुजारी द्वारा एक व्यक्ति के साथ पेश किया जाता था जो एक अनुष्ठान करता था (ज्यादातर मामलों में यज्ञ अग्नि।) यजुर्वेद की प्रमुख विशेषताएं नीचे दी गई हैं:

### यजुर्वेद की विशेषताएँ-

- इसके दो प्रकार हैं – कृष्ण (काला / काला) और शुक्ल (श्वेत / उज्वल)
- कृष्ण यजुर्वेद में छंदों का एक व्यवस्थित, अस्पष्ट, प्रेरक संग्रह है।
- शुक्ल यजुर्वेद ने छंदों को व्यवस्थित और स्पष्ट किया है।
- यजुर्वेद की सबसे पुरानी परत में 1875 श्लोक हैं जो अधिकतर ऋग्वेद से लिए गए हैं।
- वेद की मध्य परत में शतपथ ब्राह्मण है जो शुक्ल यजुर्वेद का भाष्य है।
- यजुर्वेद की सबसे छोटी परत में विभिन्न उपनिषद हैं – बृहदारण्यक उपनिषद, ईशा उपनिषद, तैत्तिरीय उपनिषद, कथा उपनिषद, श्वेताश्वतर उपनिषद और मैत्री उपनिषद
- वाजसनेयी संहिता शुक्ल यजुर्वेद में संहिता है।
- कृष्ण यजुर्वेद के चार जीवित शब्द हैं – तैत्तिरीय संहिता, मैत्रायणी संहिता, कौह संहिता, और कपिस्ताला संहिता।

### अथर्ववेद:

अथर्व का एक तत्पुरुष यौगिक, प्राचीन ऋषि और ज्ञान (अथर्वण + ज्ञान) का अर्थ है, यह 1000-800 ईसा पूर्व का है। अथर्ववेद की प्रमुख विशेषताएं नीचे दी गई हैं।

### अथर्ववेद की विशेषताएँ-

- इस वेद में जीवन की दैनिक प्रक्रियाओं को बहुत अच्छी तरह से जाना जाता है।
- इसमें 730 भजन / सूक्त, 6000 मंत्र और 20 पुस्तकें हैं।
- पयप्पलदा और सौनकिया अथर्ववेद के दो जीवित पाठ हैं।
- जादुई सूत्रों का एक वेद कहा जाता है, इसमें तीन प्राथमिक उपनिषद शामिल हैं – मुंडका उपनिषद, मंडूक उपनिषद, और प्राण उपनिषद
- 20 पुस्तकों की व्यवस्था उनके भजन की लंबाई से होती है।
- सामवेद के विपरीत जहां ऋग्वेद से भजन उधार लिए गए हैं, अथर्ववेद के भजन कुछ को छोड़कर अद्वितीय हैं।
- इस वेद में कई भजन शामिल हैं, जिनमें आकर्षण और जादू के मंत्र थे, जिनका उच्चारण उस व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो कुछ लाभ चाहता है, या अधिक बार एक जादूगर द्वारा जो इसे अपनी ओर से कहता है।

### वेदव्यास का वेदों में क्या योगदान था और आखिर कैसे उनका नाम कृष्णद्वैपायन व्यास से वेदव्यास पड़ा।

पौराणिक कथाओं में यह बताया गया है की एक समय के लिए सौ साल का अकाल आ गया था जिसमें बहुत से ग्रंथ असंगठित हो गए थे तब वेदव्यास ने दुबारा इन वेदों और पुराणों को एक साथ संगठित किया था जब वेदव्यास इन वेदों को संगठित कर रहे थे तो उन्होंने इनको आसान बनाने के लिए भागों में बांट दिया जैसे कविता संविता और मंडल में बांट दिया था वेदव्यास वेदों को संगठित करने वाले है ना कि इनकी रचना करने वाले वेदों कि रचना तो ब्रह्मा के चार पुत्रों द्वारा हुई थी।

